ब्रह्मा कुमारी संस्था

ढोल की पोल

रामगोपाल शालवाले (वानप्रस्थ)

ओ३म्

दादा लेखराज द्वारा संस्थापित सिन्ध की

ओम् मण्डली

का परिवर्तित रूप

ब्रह्माकुमारी संस्था

लेखक :-

श्री स्वामी आनन्दबोध सरस्वती
(रामगोपाल शालवाले वानप्रस्थ)
प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली

□ □ □

— प्रकाशक —

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली
महर्षि दयानन्द भवन, रामलीला मैदान, नई दिल्ली-२

सप्तम संस्करण २,००० मूल्य ६० पैसे
(१६८७)

ओ३म्

सिन्ध के दादा लेखराज द्वारा संस्थापित मण्डली का परिवर्तित नाम-करण संस्कार विभाजन के पश्चात् भारत में 'ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय, के नाम से किया गया। इनकी शाखाएँ भारत के अनेक नगरों में स्थापित हो चुकी हैं। इनका प्रधान केन्द्र आबू पर्वत पर 'पोकरान हाउस' में है जहाँ ग्रीष्म ऋतु में दादा लेखराज अनेक शिष्य शिष्याओं के साथ स्वयं निवास करते हैं। लगभग १० वर्ष से विभाजन के पश्चात् यह संस्था ब्रह्माकुमारी नाम से चुप-चाप काम करती रही है। दिल्ली एवम् अन्य नगरों की सम्भ्रान्त घरानों की देवियां घर बार को छोड़कर जब दादा लेखराज के सम्पर्क में आबू पर चली गईं तो उस समय यह संस्था जनता में चर्चा का विषय बन गई। कुछ लोगों ने इनका वास्तविक आचरण जानने का प्रयत्न किया और उनका भेद खुलने पर जनता आश्चर्यचकित हो गई।

इनका कहना है कि सृष्टि को उत्पन्न हुए ५ हजार वर्ष बीते हैं, और दादा लेखराज के वृद्ध शरीर में भगवान् अवतरित हुए हैं। अतः पिता श्री दादा लेखराज जी स्वयं भगवान् हैं। ५ हजार वर्ष पहले कृष्ण ने गीता नहीं कही। इसके रचयिता भी स्वयं ब्रह्मा दादा लेखराज ही हैं। इस सम्बन्ध में 'पोकरान हाउस' से प्राप्त आदि देवी ब्रह्माकुमारी

सरस्वती मातेश्वरी के पत्र की कुछ पंक्तियां उद्धृत की जाती हैं। यह पत्र १६।७।५९ को उनके प्रधान कार्यालय से मेरे नाम रजिस्टर्ड भेजा गया था—

"ता० १९ दैनिक 'वीर अर्जुन' में आपका एक प्रवचन छपा था।"

"हमारे और आपके साथ जगत् के परम प्रिय निराकार ज्ञान-स्वरूप गीता के भगवान् त्रिमूर्ति परमात्मा शिव स्वयं ही पिता श्री ब्रह्मा हैं जिन्हें कि लौकिक नाम अर्थात् दादा लेखराज जी के नाम से याद करते हैं।" इससे प्रकट होता है कि ब्रह्माकुमारी संस्था दादा लेखराज को ही सृष्टि का कर्ता, धर्त्ता तथा प्रलय करने वाला मानती है। ब्रह्माकुमारियां शब्दाडम्बर में हिन्दू जनता को फंसाने के लिए गीता का नाम लेकर अनेक प्रकार के भ्रममूलक विचार बड़ी चालाकी से फैलाने का यत्न करती हैं। वस्तुतः यह संस्था दादा लेखराज के अतिरिक्त अन्य किसी भी वेद, शास्त्र, उपनिषद्, राम, कृष्ण, गीता तथा देवी-देवता पर विश्वास नहीं करती। अपने उपर्युक्त कथन की पुष्टि में 'त्रिमूर्ति' पत्र दिसम्बर-जनवरी १९५७-५८, पृष्ठ ४०, अंक ९, १०, ११ से निम्न पंक्तियां उद्धृत की जाती हैं—

"अतः स्पष्ट है कि महाभारत और श्रीमद्भागवत के आधार पर जो यह मान्यता प्रचलित है कि गीता ज्ञान श्री कृष्ण ने दिया, उसने महाभारत का युद्ध कराया, उसने केवल अर्जुन को ही ज्ञान दिया—इत्यादि यह केवल भ्रममूलक है। वास्तविकता तो यह है कि गीता का ज्ञान परमात्मा शिव ने संगम युगे ब्रह्मा द्वारा धर्मस्थापनार्थ संसार को साधारणतया तथा भारतवासियों को विशेषतया दिया। परन्तु आज इन रहस्यों को कोई नहीं जानता।"

सहज ज्ञान और सहज योग के पृष्ठ ८ पर लिखा है (११) "भगवान् कहते हैं—५ हजार वर्ष पहले भी गीता ज्ञान एवं योग की शिक्षा

मैंने (भगवान् ज्योतिर्लिगम शिव अर्थात् दादा लेखराज) दी थी और अब भी मैं ही पुनः वह शिक्षा दे रहा हूँ। गीता का ज्ञान दिव्य गुणधारी देवता अथवा मनुष्य श्रीकृष्ण ने नहीं दिया था।"

इससे स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्माकुमारियां न वेद मानती हैं, न शास्त्रों को, न गीता के उपदेष्टा भगवान् श्रीकृष्ण हैं। यदि सभी कुछ हैं तो वह दादा लेखराज ही हैं।

इस प्रकार आज इस जागृति के युग में एक व्यक्ति अपने महा-पाखण्ड द्वारा हजारों देवियों तथा पुरुषों को बहकाने में सफल हो रहा है।

ब्रह्माकुमारियां मानती हैं कि ईश्वर निराकार है, सर्वव्यापक नहीं किंतु परमात्मा शिव ब्रह्मा के साकार साधारण वृद्ध मनुष्य तन में अवतरित हो लोगों को अपनी पहचान देता है। इस प्रकार ईश्वर को सर्वव्यापक न मानने वाली ये ब्रह्माकुमारियां भी अपने आप को आस्तिक कहने का दुस्साहस करती हैं, यह कितनी बड़ी बिडम्बना है।

यह सभी प्रकार के संदेहों से रहित होकर कहा जा सकता है कि संसार के समस्त आस्तिक एवम् ईश्वर विश्वासी चाहे वे मुसलमान हों, ईसाई हों अथवा हिन्दू, परब्रह्म परमात्मा को सृष्टिकर्त्ता एवं सर्वव्यापक मानते हैं, वे भी उसकी सर्वव्यापकता को अस्वीकार नहीं करते ब्रह्माकुमारी संस्था का ईश्वर को एकदेशी मानना सम्पूर्ण आस्तिक जगत् के विरुद्ध है तथा सनातन वैदिक मर्यादा के तो सर्वथा ही विपरीत है। संसार के आरम्भ में ज्ञान का प्रसार तक पुरुषविशेष के द्वारा होता है और वर्तमान समय में मानवी पिता श्री लेखराज जी हैं : इसको प्रमाणित करने का कोई आधार नहीं हो सकता और सम्भवतः इसीलिए किसी ग्रन्थ को प्रामाणिक मानने का झंझट अपने ऊपर पिता श्री दादा लेखराज जी ने नहीं लिया। अतः यह विश्वास केवल कपोल कल्पन एवं दम्भपूर्ण कहा जा सकता है।

सृष्टि की आयु केवल ५ हजार वर्ष है, यह ऐसी बात है जिसे एकांत सत्य कह कर प्रसारित किया जा रहा है। जरा विचार तो कीजिए कि यह बूढ़ा हिमालय क्या केवल ५ हजार वर्षों पुराना ही है ? क्या समुद्र की उम्र केवल ५ हजार वर्षों की ही है ? ब्रह्माकुमारियों के अनुसार क्या आकाश प्रलय के मुख में जाता दिखाई दे रहा है ? क्या जंगलों का इतिहास इतना ही क्षुद्र अवधि वाला है ? क्या ज्ञान-विज्ञान एवं पुरातत्त्व के आज तक प्राप्त अनुभवों के द्वारा उपर्युक्त बात को सत्य रूप में स्वीकार किया जा सकता है ?

स्थानाभाव के कारण इस संस्था की केवल संक्षिप्त जानकारी देना ही इस समय अभीष्ट था। पुस्तिका के अन्त में कुछ प्रश्न ब्रह्माकुमारियों से किये गये हैं। मुझे विश्वास है कि जनता उन पर मनन करेगी और उनका उत्तर उन से मांगेगी।

मैं पहले बता चुका हूँ कि ब्रह्माकुमारी संस्था ओम मण्डली का ही दूसरा रूप है। सिन्ध में ओम् मण्डली के भयंकर घोटाले एवं दादा लेखराज जी स्वयं कृष्ण बनकर और मण्डली की देवियों को गोपिकाएं बनाकर रासलीला जैसी दूषित घटनाओं के विरुद्ध साधु टी. एल. वास्वानी जैसे लोक सेवक को धरना देना पड़ा तथा जेल जाना पड़ा। उस समय सिन्ध में दादा लेखराज की अनैतिक कार्यवाहियों के कारण धार्मिक जनता में किस प्रकार खलबली मच गई थी, उसके कुछ उदाहरण उस समय के पत्रों से उद्धृत करके जनता के समक्ष रखना उचित होगा। मुझे आशा है जन साधारण इन पत्रों को पढ़कर अपनी सत्य धारणा निश्चित करने में सफल हो सकेंगे।

ओम् मण्डली

हैदराबाद (सिन्ध) की 'ओम् मण्डली' उस प्रांत के हिन्दुओं के लिए एक टेढ़ी समस्या हो गई है। कुछ दिनों से उसका वहाँ बड़ा

विरोध हो रहा है। यह संस्था क्या है, और इसके कारण कैसी विभीषिका है, इस विषय पर पटना के 'योगी' में एक ज्ञातव्य लेख प्रकाशित हुआ, जिसका मुख्यांश नीचे दिया जाता है :—

"हैदराबाद की ओम् मण्डली का दावा है कि गीता शिक्षण पर आधारित यह स्त्रियों का एक नया आन्दोलन है और इसका मूल सिद्धांत है—'मनुष्य तू अपने को पहचान'। दादा लेखराज सिन्ध का नया 'मसीहा' है जिसे कृष्ण का अवतार बतलाया जाता है। वह अपने समाज के आदमियों के द्वारा उत्पीड़ित हो रहा है। इन आदमियों ने अपने पारिवारिक जीवन के बिखर जाने के भय से और इस भय से कि स्त्रियों की अविवाहिता रहने की प्रतिज्ञा से समाज का सत्यानाश हो जाएगा ओम मण्डली पर पिकेटिंग शुरू कर दी है। नतीजा यह हुआ कि सी० पी० सी० की १०७ वीं धारा के अनुसार सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत में पिकेटिंग करने वालों के अलावा **ओम् मण्डली के संस्थापक और चार सदस्याओं पर मुकद्दमा चल रहा है।**

'दादा लेखराज खूबचन्द एक अवकाश प्राप्त व्यवसायी हैं। उन्होंने ओम् मण्डली नाम से एक ट्रस्ट कायम किया है।

ओम् राधे अध्यक्षा हैं। संस्था के प्रबन्ध में स्त्रियों की कमेटी उसकी सहायता करती है। संस्था की ओर से रोज सत्संग या धार्मिक वाद विवाद होते हैं और पीछे भजन होते हैं।

हैदराबाद के भाई-बन्द (व्यापारी) समाज की स्त्रियां बहुधा धर्म-गुरुओं के फेर में पड़ जाती हैं। इस संस्था का उद्देश्य यह है कि उन स्त्रियों को उनके चंगुल से छुड़ाया जाय। अपंगों को सिलाई का काम सिखाया जाता है, ताकि वे अपनी जीविका कमा सकें। जोर इस बात पर दिया जाता है कि विवाहित जीवन में प्रवेश करने के पहले "ज्ञान" हासिल कर लो, अधिक से अधिक लाभ उठाने के ख्याल से स्त्रियों को

कहा जाता है कि यह 'ज्ञान' अपने पतियों में भी फैलाओ ताकि एक सुसंस्कृत और सुन्दरतर समाज की नींव डाली जा सके।

मण्डली के इस रूप के कारण ही समाज का विरोध उठ खड़ा हुआ है। लोगों का कहना है कि स्त्रियाँ हड़ताल कर रही हैं। पंचायत के पास तीन ऐसे निराश पतियों के प्रार्थना पत्र पहुंचे जो दूसरी शादी करना चाहते हैं।

मण्डली के खिलाफ दूसरा लांछन यह है कि स्वर्ग में अपना स्थान 'सुरक्षित' रखने की इच्छा से स्त्रियां अपने पति, घरबार और बाल बच्चों को त्याग कर चलती बनती हैं। भाई-बन्द समाज की जनसंख्या ६०००० है। ये व्यापारी हैं। हिन्दुस्तान के बाहर संसार के और देशों में १२००० पुरुष व्यापार-रत हैं। तीन साल से लेकर पांच साल तक वे घरों से गैर हाजिर रहते हैं, कम से कम छः महीने भी घर में आराम नहीं करते।

सत्संग के अवसर पर ओम् मण्डली की सदस्याएं बेहोश हो जाती हैं। इसे दादा लेखराज का जादू टोना बतलाया जाता है। दादा लेखराज शांत और गम्भीर रहता है। कहता है कि उत्पीड़ना और बलिदान साथ-साथ चलते हैं। "अज्ञानी जो कुछ करना चाहें करने दो। उचित अवसर पर ही वे ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।"

ओम् मण्डली भवन भी २१ जून को गिर पड़ा। १००० आदमियों की भीड़ ने उसे घेर लिया, भवन और माल-असबाब का सत्यानाश कर धूम मचा दी। फिर ओम्मण्डली ओम् निवास में चली गई। मण्डली की यह एक शाखा है। विरोधी वहाँ भी पहुंचे और पिकेटिंग शुरू कर दी

भीड़ दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही थी। इसलिए पुलिस को हस्तक्षेप करना पड़ा। ५ पिकेटिंग करने वाले और ५ मण्डली की मालिकाएं

गिरफ्तार की गईं। मर्दों-औरतों की संयुक्त बैठकों पर अड़ंगा डाल दिया था। इस अड़ंगे के विरोध-स्वरूप मुकद्दमा होने तक मण्डली ने अपने तमाम सत्संगों को स्थगित कर दिया।

—:०:—

(सरस्वती संख्या ६, भाग ३९, पृष्ठ १६३, दिसम्बर १९३८)
(सम्पादक—देवीदत्त शुक्ल, श्री नाथसिंह)

जब दादा लेखराज पर मुकद्दमा चला

ब्रह्माकुमारी-आन्दोलन के समर्थकों का कहना है कि दादा लेखराज और उनकी मण्डली पर कोई मुकद्दमा नहीं चला।

(इस सम्बन्ध में प्रयाग की सुविख्यात हिन्दी मासिक पत्रिका 'सरस्वती' भाग ३९, संख्या ६, खंड १, मई १९३८) के एक लेख की ओर ध्यान आकृष्ट किया जाता है। इस में पटना के 'योगी' पत्र के निम्न शब्द उद्धृत किए गये हैं, जो द्रष्टव्य हैं।

"ओम् मण्डली पर पिकेटिंग शुरू कर दी है। नतीजा यह हुआ है कि सी० पी० सी० की १०७वीं धारा के अनुसार सिटी मजिस्ट्रेट की अदालत में पिकेटिंग करने वालों के अलावा ओम् मण्डली के संस्थापक और चार अन्य सदस्यों पर मुकद्दमा चल रहा है।

इससे यह स्पष्ट हो ही जाता है कि दादा लेखराज और उनकी ओम् मण्डली के सदस्यों पर मुकद्दमा चल चुका है।

उसी पत्रिका में १९३६ में एक सम्पादकीय लेख प्रकाशित हुआ जिसका शीर्षक है :—

धर्म के नाम पर

"हमारी धर्मान्धता पर जब कोई मिस मेयो कटाक्ष करती है तब हम तिलमिला उठते हैं और उस धूल का जवाब कीचड़ से देने को तैयार हो जाते हैं, पर यह सोचना गवारा नहीं करते कि हमारा धर्म जिसे हम प्राचीन व्यापक और उदार समझते हैं, अपने अन्दर कितना कूड़ा करकट छिपा सकता है। राम और कृष्ण के नाम की आड़ लेकर दिन दहाड़े समाज में जो लीलाएं होती रहती हैं, उनका भण्डाफोड़ होने पर भी कभी कभी ऐसे रहस्यों का पता लग जाता है जिन्हें देख सुन-कर दांतों तले उंगली दबानी पड़ती है, पर इतने पर भी हमारी निद्रा भंग नहीं होती। हम देखते हुए भी अन्धे और सुनते हुए भी बहरे बने रहते हैं। हमारी बछिया के ताऊ वाली मनोवृत्ति से लाभ उठाने के लिए देश के किसी न किसी उपर्युक्त क्षेत्र में कृष्ण या राम के एक-आध अवतार होते ही रहते हैं और हम अपनी या विवाहित अविवाहित बहू-बेटियों को उनके पास धर्म की दीक्षा लेने के लिए निस्संकोच भेज देते हैं। संकोच का प्रश्न ही क्या ! हम तो ऐसा करने में अपना गौरव मानते हैं, यही तो हिन्दुत्व की उदारता है। यही तो उसकी महत्ता है।

पिछले कई महीनों से हम कराची के दादा लेखराज और उनकी ओम् मण्डली की चर्चा अखबारों में पढ़ रहे हैं। उनकी कृष्ण लीला के विरोध में कराची के सुधार प्रेमी नागरिकों को सत्याग्रह तक करना पड़ा। यहाँ तक कि श्री टी०एल० वास्वानी सरीखे लोक सेवी संन्यासी भी जेल में बन्द हो गए। **यही नहीं सिन्ध प्रान्त की सरकार के दो हिन्दू मन्त्रियों ने भी विरोध प्रदर्शनात्मक इस्तीफा भी दे दिया।** इतने आन्दो-लन के बाद सरकार ने ध्यान दिया और उसने **ओम् मण्डली, दादा लेखराज और उनकी हरकतों पर नियन्त्रण लगाया है और अब अदा-लती कार्यवाही करना आरम्भ किया है।**

दादा लेखराज की प्रमुख शिष्या ओम् राधे ने अदालत में ओम् मण्डली के सम्बन्ध में जो बयान दिया है उससे पता लगता है कि ओम् मडण्ली में यह शिक्षा दी जाती थी कि स्त्री पुरुष में कोई भेद नहीं। **वहां विवाहित स्त्रियों को अपने पतियों को छोड़ देने और अविवाहिताओं को आजन्म कुमारी रहने की शिक्षा दी जाती थी। यह भी सिखलाया जाता था कि दादा लेखराज कृष्ण के अवतार हैं और मण्डली की समस्त स्त्रियां उनकी गोपिकाएं।**

हमें शिकायत है अपनी उन पर्दानशीन बहू-बेटियों से जो घर से बाहर निकलने में तो लाज से गड़ जाती हैं, पर धर्म के नाम पर भेड़ की तरह अन्धे कुएं में जा गिरती हैं। बीसवीं सदी के द्वितीय चरण में भी यदि ये धर्म मण्डलियां दिन दूनी और रात चौगुनी बढ़ती और फलती फूलती रहें तो इसका श्रेय हम अपनी धर्मभीरु माताओं, बहनों, बन्धुओं और कन्याओं को छोड़ कर और किसे दें।

(सरस्वती भाग ४०, संख्या ५, खण्ड १, मई १९३९, पृ० ५३०)
(संपादक — देवीदत्त शुक्ल — उमेशचन्द्र देव)

मेरे नाम

भिवानी से एक देवी का पत्र

दिनांक— १२।७।५६

आपको यह पत्र आर्य भाई बहिन के नाते लिख रही हूं। आप जैसे भाई से आशा करती हूँ इस समय देवियों की जो हालत है, उसे सुधारने की चेष्टा करेंगे। इस समय ब्रह्माकुमारियों के नाम पर प्रचलित मत में देवियों को खूब बहकाया जाता है। मैं इनकी हालात देखने के लिए ब्रह्माकुमारियों में सम्मिलित हुई। इस समय ब्रह्माकुमारी के साथ आबू पर्वत पर गई, जहाँ इनका अखिल भारतीय प्रधान केन्द्र है। जब

हम वहाँ पहुंचे तो उनका नौकर हमारा सामान अन्दर ले गया और कुछ देवियां बाहर आ गई। बाबा और मातेश्वरी (दादा लेखराज और सरस्वती) भी बाहर आ गये। मैंने उनको नमस्ते की। मुझे ऐसे देखने लगे जैसे कोई अनपढ़ आ गई है—क्योंकि वहाँ कोई नमस्ते नहीं करता। फिर एक और टोली वहां आई। टोली की सारी देवियाँ बाबा की गोद में गईं और मुझे कहा कि यहाँ नमस्ते नहीं की जाती, बाबा की गोद में जाना होता है जबकि हम खा पीकर खाली हुई तो कुछ देवियाँ मेरे पास आयीं और कहने लगीं कि तुम बाबा की गोद में क्यों नहीं बैठीं ? मैंने कहा कि मैं पर-पुरुष की गोद में कैसे बैठ सकती हूँ ! तो कहने लगीं कि बाबा जब गद्दी पर बैठता है तब भगवान् हो जाता है। हम उनको भगवान् समझकर उनकी गोद में बैठती हैं। मैंने कहा कि जब तक मैं इनको भगवान् न समझूं तब तक पर पुरुष ही समझूंगी। प्रातःकाल जागने पर एक रिकार्ड बजता है--"जाग सजनिया जाग।" उसके पश्चात् सब हाल में चले जाते हैं और मातेश्वरी गद्दी पर बैठ जाती हैं। १५ मिनट बाद फिर रिकार्ड बजता है और फिर बाबा गद्दी पर बैठ जाते हैं। ऊपर लाइट के कुछ चक्कर लगाए होते हैं जो खिड़कियां बन्द करके बाबा पर डाले जाते हैं। फिर कहती हैं—देखो बाबा का कितना तेज है। वस्तुतः वह तेज नहीं लाइट की करामात होती है। थोड़ी देर में बाबा कुछ बोलते हैं जिसे मुरली कहा जाता है। कुछ समय बाद बाबा सब देवियों के मुंह में अपने हाथ से बादाम और इलायची डालता है। मेरी जैसी की मुश्किल थी। बाबा का प्रवचन जिसे मुरली कहा है, सारे केन्द्रों में छापकर भेजा जाता है। १० से १२ बजे तक विचार-विमर्श होता है—जिसमें मैंने कई शंकाएं कीं किन्तु उनका कोई समाधान नहीं हुआ। फिर भोजन विश्राम आदि। फिर ५ बजे के बाद सब लड़कियां बाबा के साथ बैडमिंटन खेलती हैं। ७ से ७॥ योग की क्लास होती है। फिर सैर इत्यादि। रात को सब बाबा के साथ ताश खेलते हैं, जिसे गधा कहते हैं। जिसमें अकसर लड़कियां होती हैं। जो

औरत गधा बनेगी उससे बाबा प्यार करेगा, ऐसा कहा जाता है तथा उसके मुंह में बादाम इत्यादि डालेगा और थापी देगा। वीरवार को वहाँ भोग लगता है—यहां एक देवी जिनको मातेश्वरी कहा जाता है, ब्रह्म लोक में आँख मूंद कर चली जाती है और वहां से आज्ञाएं लेकर आती है। (उसको सन्देशपुत्री भी कहते हैं।)

वह सबके नाम सन्देश लाती है। फिर वह देवी कहती है— भगवान् को भोग लग गया है। तदनन्तर बाबा अपने हाथ से सब को प्रसाद देते हैं। फिर बाबा को सब लोग गले मिलते हैं। मैंने बाबा को गले मिलने से इन्कार कर दिया। इस पर मातेश्वरी कहने लगी कि इसमें त्रुटि है, इसलिए बाबा की गोद में नहीं आ सकती।

कई बार बाबा सब को सैर करने के लिए ले जाते हैं। एक जवान लड़की उनके एक तरफ और दूसरी, दूसरी तरफ बाहों में बाहें डालकर खूब तेज चलती हैं। इस प्रकार से वहां की अवस्था देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ।

बाबा को भगवान् माना जाता है और कहा जाता है कि बाबा कलियुग का खात्मा करके सत्ययुग की स्थापना करने आये हैं। सत्ययुग में मातेश्वरी रानी और बाबा राजा बनेंगे। बड़ा भारी पाखण्ड करके कहते हैं कि बाबा जी में भगवान् प्रवेश करते हैं, इस लिए हम भगवान् को मानते हैं, वेदों को नहीं। इस समय यहां इतनी निर्लज्जता है कि करनाल के एक मास्टर ने अपनी पत्नी को अपने सामने बाबा की गोद में चले जाने को कहा—वह इस पर बहुत प्रसन्न था। एक लड़की धर्मशाला से एक गोरखा लड़की को लाई, जिसने बाबा के सामने नाच किया।

मैं एक सप्ताह वहां रही। आशा करती हूँ कि आप इस ओर ध्यान देंगे और इस पाखण्ड को दूर करने का यत्न करेंगे।

ब्रह्माकुमारियों से प्रश्न

१. आप कहते हैं कि सृष्टि को उत्पन्न हुए ५ हजार वर्ष हुए हैं जब कि कोई शास्त्र और किसी प्रकार का इतिहास इस बात का समर्थन नहीं करता। 'सूर्यसिद्धांत' जो कि ज्योतिष का सब से पुराना एवं सर्वसम्मत ग्रंथ है, जिसे भारत तथा यूरोप के सभी बड़े बड़े विद्वान् प्रामाणिक स्वीकार करते हैं, के अनुसार इस सृष्टि को उत्पन्न हुए १ अरब ९७ करोड़ २९ लाख ४९ हजार ८७ वर्ष हो चुके हैं। इस बाकायदा गणना को निरर्थक नहीं कहा जा सकता और कहने का सामर्थ्य आज तक किसी को नहीं हुआ। प्रसिद्ध इतिहास के अनुसार रामायणकालीन समय लगभग ८ लाख वर्ष सभी विद्वान् स्वीकार करते हैं। महाभारत काल को ५ हजार वर्ष हो चुके। ऐसी अवस्था में ब्रह्माकुमारियों का यह कहना है कि सृष्टि को ५ हजार वर्ष हुए कोरी कल्पना है। न्यायदर्शन के अनुसार 'लक्षणप्रमाणाभ्यां वस्तुसिद्धिः न तु प्रतिज्ञामात्रेण।' किसी बात की सिद्धि लक्षण और प्रमाणों से ही होती है, केवल कह देने मात्र से नहीं। अतः किसी गणित शास्त्र का कोई प्रमाण हो तो उपस्थित करो कोरी प्रतिज्ञा करने मात्र से आपकी बात की सिद्धि नहीं हो सकती। अतः ५ हजार वर्ष वाली बात कोरी गप्प है।

हमारी उपर्युक्त सृष्टि संवत् काल की गणना को आज का विज्ञान भी स्वीकार करता है एवं पुरातत्त्व-विशारद अपनी खोज के आधार पर भी सृष्टि की आयु लगभग इतनी ही मानते हैं।

२. सृष्टि का उत्पन्न करने वाला परमात्मा है, यह आप भी स्वीकार करते हैं। कृपया बतलाने का कष्ट करें कि सृष्टि उत्पन्न होने के पूर्व अपनी कारणावस्था में किस प्रकार की स्थिति में थी ? कृपया यह भी बतलाइये कि सृष्टि के उत्पन्न होने का क्रम क्या है ?

३. यदि ईश्वर सर्वव्यापक नहीं, तो सृष्टि-उत्पत्ति किस प्रकार हुई ?

बनाने वाला बनने वाली वस्तु के साथ रहा करता है या अलग होकर बनाता है ? सृष्टि किस से बनाता है ? कैसे बनाता है ? पंच महाभूतों के सूक्ष्म तत्त्व परमाणु रूप में आकाश की तरह व्यापक रहते हैं तो एकदेशी परमात्मा जो कि व्यापक नहीं है, उन फैले हुए तत्त्वों को किस प्रकार गति दे सकता है ? उन तत्त्वों की आकाश में किस प्रकार स्थिति होती है ? जड़ होने के कारण उनमें स्वयं बनने की सामर्थ्य होती नहीं, सर्वव्यापक न होने से परमात्मा किस प्रकार उनकी रचना करने में समर्थ हो सकता है ?

४. आकाश नाश रहित है या नाशवान् ? आकाश की परिभाषा करिए, आप आकाश किसे कहते हैं वह एकदेशी है या व्यापक ?

५. जीवात्मा और परमात्मा में क्या भेद है ? दोनों का लक्षण बताकर स्पष्ट करिए।

६. क्या कोई एकदेशी पदार्थ सर्वत्र हो सकता है ? यदि नहीं, तो किसी शरीरधारी एकदेशी जीवात्मा को ईश्वर मानना क्या जनता को धोखा देना नहीं ?

७. आपके मन्तव्यानुसार यदि दादा लेखराज स्वयम् ईश्वर हैं तो दर्शन के इस सूत्र के अनुसार कि—

क्लेशकर्मविपाकाशयैरपरामृष्टः पुरुषविशेष ईश्वरः।
अविद्या-अस्मिता-राग-द्वेष-अभिनिवेशाः पञ्चक्लेशाः।

क्या इन पांचों क्लेशों से शरीरधारी होने के कारण मुक्त हैं ? जब कि संसार में अब तक किसी शरीरधारी का ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिला।

८. हमें प्राप्त सूचना के अनुसार दादा लेखराज ब्रह्माकुमारियों को अपनी गोद में बिठाते हैं। क्या मनु द्वारा कहे हुए अष्ट मैथुनों के अन्तर्गत आने से यह मर्यादा का अतिक्रमण नहीं है ?

महात्मा नारायण स्वामी की अनुपम पुस्तकें

१. विद्यार्थी जीवन रहस्य	मूल्य :	१·५० रु०
२. नवीन और प्राचीन समाजवाद		१.६० रु०

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली-२
के प्रकाशन

१.	दयानन्द दिव्य-दर्शन ५१ रु० वाला	३५ रु० में
२.	बृहद् विमान शास्त्र	२० रु०
३.	आर्यसमाज की उपलब्धियां	५ रु०
४.	आर्यसमाज स्थापना शताब्दी स्मारिका	५ रु०
५.	मौरीशस स्मारिका	५ रु०
६.	मृत्यु परलोक	४ रु०
७.	पूजा किसकी ?	.३५ पैसे
८.	आर्यसमाज	.३५ पैसे
९.	धर्म के नाम पर राजनैतिक षड्यंत्र	.५० पैसे
१०.	वैदिक धर्म	६ रु०
११.	शराबबन्दी क्यों ?	२५ पैसे
१२.	आर्यसमाज क्या है ?	१.५० रु०
१३.	कर्तव्य दर्पण	३ रु०
१४.	मेरे सपनों का भारत	२.५०
१५.	गो-हत्या राष्ट्र-हत्या	२ रु०
१६.	कल्याण मार्ग का पथिक	४.५० रु०
१७.	भारत का एक ऋषि	०.५० पैसे
१८.	आत्मदर्शन	४ रु०

वैदिक प्रेस, गली नं० १७, कैलाशनगर, दिल्ली-३१